International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रविन्द्र नाथ टैगोर के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन

डॉ रमाकान्त यादव
एसो. प्रो. बी.एड. विभाग
चौ. चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, हेंवरा, इटावा (उत्तर प्रदेश)

"उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें न केवल जानकारी देती है बल्कि हमारे जीवन में अस्तित्व के साथ सामंजस्य बिठाती है"। - (रविंद्रनाथ टैगोर)

एक मानवतावादी के रूप में, वह मानव भाईचारे और ब्रह्मांड के आध्यात्मिक बंधन के बारे में बात करते हैं; शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व के सभी पहलुओं अर्थात शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक का विकास करना है।

एक व्यक्तिवादी के रूप में, टैगोर इस बारे में बात करते हैं - प्रत्येक बच्चे में अपनी जन्मजात क्षमताएं होती हैं जो उसे अद्वितीय बनाती हैं और क्षमताओं की वृद्धि के माध्यम से व्यक्ति पूर्णता की स्थिति प्राप्त करने में सक्षम होगा। एक आदर्शवादी के रूप में वे तपस्या और साधना की बात करते हैं।

एक प्रकृतिवादी के रूप में, वे इस बारे में बात करते हैं - विषयों को बच्चे के वातावरण में मौजूद विभिन्न तत्वों के उपयोग के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए ताकि वह विषय को प्रभावी ढंग से समझ सके। कठोर कक्षाकक्ष वातावरण में शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो सकता।

यह गुरुकुल प्रणाली की तरह खुले वातावरण में होना चाहिए जहाँ शिक्षार्थी अपने अनुभवों के अनुसार विषय सीखते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया - एक व्यक्ति प्रकृति से अपने स्वयं के अनुभवों के माध्यम से सीखता है। भगवान ने प्रकृति को बनाया है और अगर कोई प्रकृति के साथ तालमेल बिठाता है तो इसका मतलब है कि भगवान के साथ तालमेल बिठाना।

टैगोर के अनुसार शिक्षा का अर्थ है मन और आत्मा की स्वतंत्रता। यह हमारी अपनी परंपरा और संस्कृति पर आधारित होना चाहिए।

यदि कहा जाता है कि अनादि काल से एक चीज नहीं बदली है, तो यह हमारे समाज में ज्ञान है। यदि भाषा के माध्यम से भाषण और ज्ञान के प्रसार का कोई विकासवादी विकास नहीं होता, तो यह कल्पना करना मुश्किल है कि मानवता कैसे विकसित होगी।

यह एक कारण हो सकता है कि 21वीं सदी में भी माता-पिता अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए लगातार प्रयास करते हैं। दुर्भाग्य से, वर्तमान में भारतीय शिक्षा प्रणाली चौंका देने वाली है। शिक्षा के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्त्रोत होने के बावजूद ,शिक्षाप्रणाली महान दार्शनिकों की सूक्ष्म आवृत्तियों से संदेश लेने में विफल हो रही है।

रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म स्वतंत्रता पूर्व भारत में संघर्ष की अवधि के दौरान हुआ था। वे स्वतंत्र मन, मुक्त ज्ञान और स्वतंत्र राष्ट्र के विकास के पक्षधर थे। एक छोटे लड़के के रूप में भी वह महसूस कर सकता था कि स्कूल एक दिनचर्या के अलावा और कुछ नहीं था। स्कूली शिक्षा का उनके जीवन पर लगभग कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उनके अनुसार, शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य किसी के जीवन और बाहरी दुनिया के बीच सही तालमेल के संरक्षण को सक्षम बनाना था।

टैगोर के शैक्षिक दर्शन में चार मूलभूत सिद्धांत हैं; प्रकृतिवाद, मानवतावाद, अंतर्राष्ट्रीयवाद और आदर्शवाद। शांतिनिकेतन और विश्व भारती दोनों इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित हैं।

उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा एक प्राकृतिक परिवेश में प्रदान की जानी चाहिए। वह बच्चों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देने में विश्वास करते थे। उन्होंने कहा, "बच्चों का सक्रिय अवचेतन मन होता है जो एक पेड़ की तरह आसपास के वातावरण से अपना भोजन इकट्ठा करने की शक्ति रखता है।" उन्होंने यह भी कहा कि एक शैक्षणिक संस्थान "एक पिंजरा नहीं होना चाहिए जिसमें जीवित दिमाग कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता है। हस्तशिल्प और कलाएं हमारी गहन प्रकृति और आध्यात्मिक महत्व के सहज प्रवाह हैं।"

उनके अनुसार, "शिक्षा का अर्थ मन को उस परम सत्य का पता लगाने के लिए सक्षम करना है जो हमें धूल के बंधन से मुक्त करता है और हमें चीजों का नहीं बल्कि आंतरिक प्रकाश का, शक्ति का नहीं बल्कि प्रेम का धन देता है। यह ज्ञानोदय की एक प्रक्रिया है। यह दैवीय धन है। यह सत्य की प्राप्ति में मदद करता है "।

शिक्षा का उद्देश्य अज्ञानता को दूर कर ज्ञान के प्रकाश में लाकर मनुष्य को पूर्णता प्रदान करना है। यह हमें एक संपूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाना चाहिए - आर्थिक, बौद्धिक, सौंदर्य, सामाजिक और आध्यात्मिक।

उनके स्कूल का मुख्य उद्देश्य - शांतिनिकेतन प्रकृति के प्रति प्रेम पैदा करना, अपनी मूल भाषा में ज्ञान और ज्ञान प्रदान करना, मन, हृदय और इच्छा की स्वतंत्रता, एक प्राकृतिक वातावरण प्रदान करना और अंततः भारतीय संस्कृति को समृद्ध करना था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

टैगोर के लिए धर्म एक आदर्श था। भारतीय संस्कृति का केंद्र' नामक पुस्तिका मेंकवि विश्व भारती के आदर्शों को व्यक्त करते है।

वहां वे लिखते हैं, 'शिक्षा में रचनात्मक गतिविधि का सबसे प्रेरक माहौल महत्वपूर्ण है। संस्था का प्राथमिक कार्य रचनात्मक होना चाहिए; सभी प्रकार के बौद्धिक अन्वेषण के लिए गुंजाइश होनी चाहिए। शिक्षण संस्कृति, आध्यात्मिक, बौद्धिक, सौंदर्य, आर्थिक और सामाजिक के साथ एक होना चाहिए। सच्ची शिक्षा हर कदम पर यह महसूस करना है कि हमारे प्रशिक्षण और ज्ञान का हमारे परिवेश के साथ जैविक संबंध कैसे है"।

टैगोर कहते हैं, "हमें पता होना चाहिए कि हमारी संस्था का महान कार्य विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मन और सभी इंद्रियों की शिक्षा प्रदान करना है"।

धर्म का उल्लेख करते हुए, रवींद्रनाथ टैगोर ने एक शैक्षणिक संस्थान की तुलना 'एक विस्तृत बैठक स्थल से की है जहाँ सभी संप्रदाय एक साथ इकट्ठा हो सकते हैं और अपने मतभेदों को भूल सकते हैं'। विश्व भारती के सहयोग के ज्ञापन में, टैगोर ने उद्देश्यों को लिखा है, "विभिन्न दृष्टिकोणों से सत्य के विभिन्न पहलुओं की प्राप्ति में मनुष्य के दिमाग का अध्ययन करने के लिए, विश्व भारती की संस्कृति मनुष्य की संस्कृति है और इसकी मुख्य बात है इस सत्य में निहित है कि मानव व्यक्तित्व कोई तुच्छ वस्तु नहीं है, वह ईश्वरीय व्यक्तित्व भी है।"

वह शिक्षार्थी के प्रकृति के साथ संपर्क पर भी जोर देता है। शारीरिक गतिविधि के अलावा प्रकृति किसी भी संस्था से ज्यादा मनुष्य को सिखाती है। शैक्षिक संस्थानों को इस तथ्य के महत्व को समझना चाहिए और सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों को अच्छे प्रभाव में लाना चाहिए।

टैगोर का मानना है कि, शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार करना है और शिक्षा मानव उत्थान, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व, सद्भाव और बौद्धिकता के लिए है। शैक्षिक संस्थानों को एक व्यक्ति में सोचने और कल्पना की शक्ति पर निर्माण करना चाहिए और खुद को मानव समाज के आत्मनिर्भर निर्माण खंड और समग्र रूप से राष्ट्र के रचनात्मक कैनवास में बदलने में मदद करनी चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बच्चे की शिक्षा की पृष्ठभूमि के रूप में प्राकृतिक पर्यावरण पर टैगोर की दूरदर्शिता की वर्तमान में बहुत आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान स्कूली पाठ्यक्रम बहुत ही व्यस्त है। एक बच्चा अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान ग्रेड और अंक हासिल करने के लिए फंस जाता है, जिससे माता-पिता पर भी दबाव बनता है। वर्तमान स्कूली शिक्षा बच्चे की भलाई को कम महत्व देती है। हम उस मुकाम पर पहुंच गए हैं जहां ज्यादातर स्कूल बिना खेल के मैदान के ही चल रहे हैं। यदि हम असफलताओं से सीखने की कोशिश किए बिना आगे चलते रहते हैं, तो हम अंतकी तरफ जा सकते हैं। बदली हुई प्राथमिकताएं, राजनीति, राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक गिरावट हमारी शिक्षा प्रणाली पर बुरी तरह से प्रतिबिम्बित हो रही है।

किसी देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक प्रगति और सुधार के लिए शैक्षिक विचार बुनियादी हथियार हैं। टैगोर के लेखन और गतिविधियों के उजागर होने के अनुसार, रवींद्रनाथ टैगोर भारत के आधुनिकीकरण के लिए शैक्षिक सुधार में अधिक केंद्रित हो गए। विशेष रूप से शिक्षा पर टैगोर के दार्शनिक विचार कई आयामों में पाए जाते हैं, जैसे कि शिक्षा का उद्देश्य, शैक्षिक अभ्यास, पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षक-छात्र संबंध और शिक्षक की भूमिका। टैगोर का मानना था कि शिक्षा को व्यक्ति को पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त करने में मदद करनी चाहिए।

शैक्षिक दर्शन को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जिसने आधुनिक समय में सभी का ध्यान आकर्षित किया है। क्योंकि यह शैक्षिक प्रक्रिया को समझने और संशोधित करने में मदद करता है। यह सिद्धांत के बारे में प्रश्न उठाने की मानवीय क्षमता विकसित करता है। इसके अलावा, यह उन अवधारणाओं और मान्यताओं को स्पष्ट करता है जो अंतर्निहित शैक्षिक सिद्धांत हैं। इसे एक ऐसे क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है जो सभी क्षेत्रों के साथ मिलकर काम करता है। अतः इसका प्रभाव इतना अधिक है कि शिक्षा दर्शन के प्रभाव के बिना कोई अन्य विषय नहीं है क्योंकि शिक्षा के दर्शन के मूल तत्व सभी विषयों में शामिल हैं।

शिक्षा का दर्शन शिक्षा के कई पहलुओं के लिए दार्शनिक मान्यताओं का व्यावहारिक अनुप्रयोग है। यह शिक्षाविदों और व्यावहारिक शिक्षकों द्वारा शैक्षिक मुद्दों को हल करने के लिए दर्शनशास्त्र को शिक्षा के क्षेत्र में ले जाने का एक दृष्टिकोण है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षा को संपूर्णता में समझने का प्रयास करता है, जिससे शिक्षा के पूरे पैमाने का एक दृष्टिकोण मिलता है। एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार, यह विभिन्न विषयों द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा की एक स्वस्थ प्रणाली का निर्माण करने और दार्शनिक अंतर्संबंधों को लागू करके सामान्य विशेषताओं का समन्वय करने का प्रयास करता है। शैक्षिक दर्शन पाठ्यक्रम के पहलुओं पर केंद्रित है।

आधुनिक भारत में शैक्षिक सुधार के विचार मौलिक हैं। इनमें से कई समकालीन भारतीय दार्शनिक शैक्षिक सुधार के विचारों को सामने रखने में असफल नहीं हुए। इस प्रकार टैगोर द्वारा प्रस्तुत सुधार विचारों ने शैक्षिक सुधार के विचारों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को प्रमुखता दी। टैगोर के अनुसार, उनके शैक्षिक विचार केवल सुधार नहीं थे, बल्कि शिक्षा के दर्शन के निर्माण में सहायक थे। क्योंकि टैगोर ने पाठ्यक्रम के पहलुओं पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित किया और यह शिक्षा के दर्शन के निर्माण का आधार है।

रवींद्रनाथ टैगोर का शैक्षिक विचार

टैगोर के शिक्षा दर्शन में चार मूलभूत सिद्धांत हैं: व्यक्तिवाद, प्रकृतिवाद, अध्यात्मवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद। शांतिनिकेतन और विश्व भारती दोनों इन्हीं विचारधाराओं पर आधारित हैं।

व्यक्तिवाद: व्यक्तिवाद इस तथ्य को संदर्भित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व को व्यक्त करने की स्वतंत्रता है

प्रकृतिवाद: उनकी सोच में प्रकृतिवाद प्रचलित है। प्रकृति के प्रति उनका प्रेम उनकी कविताओं में देखा जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि हर जीव को प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहना चाहिए।

अध्यात्मवाद: उनका शांति निकेतन अध्यात्मवाद के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा, "प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए"। टैगोर ने शिक्षा में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनके लिए धार्मिक प्रशिक्षण एक आत्मा है, एक प्रेरणा है, जो मानव जीवन के हर पहलू में व्याप्त है।

अंतर्राष्ट्रीयवाद: उन्होंने विश्व-भारती की स्थापना की और इसके साथ अंतर्राष्ट्रीयता का निर्माण करने की मांग की। उन्होंने कहा कि अच्छी चीजें साझा करने और सीखने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संबंध आवश्यक है।

टैगोर द्वारा निर्धारित शिक्षा के उद्देश्य बाहर की दुनिया से नहीं निकले, बल्कि उनके अनुभव, अभ्यास और प्रयोगों से उभरे। उन्होंने कहा कि शिक्षा सिर्फ एक किताबी शिक्षा नहीं होनी चाहिए बल्कि इसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जैसे विभिन्न स्तरों पर विकसित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समरसता का विकास करना है। उनका मानना था कि "उच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन को सभी अस्तित्वों के अनुरूप बनाती है"

इसे इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

बौद्धिक विकास: टैगोर ने बच्चे के बौद्धिक विकास पर भी बहुत जोर दिया: यह कल्पना, रचनात्मक सोच के विकास को संदर्भित करता है, बच्चे को अपने तरीके से सीखने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए जिससे सर्वांगीण विकास हो सके।

शारीरिक विकास: टैगोर के शैक्षिक दर्शन का उद्देश्य भी बच्चे का शारीरिक विकास करना है। शिक्षा शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का आधार होनी चाहिए। उन्होंने स्वस्थ काया को महत्व दिया जैसे: शांति निकेतन में शिक्षा प्रणाली के मुख्य भाग के रूप में योग, खेल और खेल दिए जाते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नैतिक विकास: उन्होंने कहा कि शिक्षा को जीवन को प्रतिबिंबित करना चाहिए और मानव व्यवहार और नैतिक मूल्यों की व्याख्या करनी चाहिए। नैतिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है कि मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए किताबी ज्ञान।

सामाजिक विकास: टैगोर ने कहा, "मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है"। उनका मानना था कि सामाजिकता और मानवीय सहृदयता वास्तव में शिक्षित व्यक्ति का एक अनिवार्य गुण है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान की परिपूर्णता से स्वयं को समृद्ध करना ही नहीं है, बल्कि मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रेम और मित्रता का बंधन स्थापित करना भी है।

पढ़ाने के तरीके

गतिविधि: उनका मानना था कि गतिविधि विधि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के लिए बहुत कुशल है। शिक्षण के तरीके व्यावहारिक होने चाहिए लेकिन सैद्धांतिक नहीं। यह रचनात्मक सोच और नवीन क्षमताओं के निर्माण में मदद करेगा। गतिविधि पद्धति ने छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रणाली को जन्म दिया।

यात्रा के दौरान पढ़ाना: टैगोर के अनुसार, वह किताबी शिक्षा को तरजीह नहीं देते। टैगोर पारंपरिक कक्षा शिक्षा के खिलाफ थे। उनका मानना था कि प्रकृति के साथ बातचीत सीखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक परिवेश सीखने की गतिविधियों के लिए सबसे अच्छी जगह है। टैगोर चलना, चढ़ना, तैरना और अन्य दैनिक कार्यों के दौरान ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।

बहस और चर्चा: टैगोर के अनुसार, उनका मानना था कि यह विधि प्रत्येक छात्र को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रखेगी

स्वतंत्रता: टैगोर के अनुसार, स्वतंत्रता शिक्षा क्षेत्र का एक प्रमुख प्रभाव है। यदि छात्र स्वतंत्र महसूस करते हैं, तो वे अपनी इच्छानुसार कार्य करने, बोलने या सोचने का अधिकार प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने छात्रों को अपनी पसंद के किसी भी क्षेत्र में अपनी रुचि विकसित करने के लिए स्वतंत्र विकल्प दिया। उसके लिए शिक्षा मनुष्य के हृदय के अनुसार होनी चाहिए। प्राकृतिक तरीके से दी जाने वाली शिक्षा से हृदय की स्वतंत्रता, बुद्धि की स्वतंत्रता और इच्छा की स्वतंत्रता की पूर्ति होगी।

शिक्षा का माध्यम: टैगोर ने इस बात पर जोर दिया है कि मातृभाषा बच्चे की शिक्षा के लिए शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए क्योंकि भाषा मानव द्वारा उपयोग की जाने वाली संचार की एक संरचित प्रणाली है। बच्चे अपनी मातृभाषा में अपने विचार आसानी से व्यक्त कर सकते हैं।

फाइन आर्ट्स: उन्होंने पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए ललित कला पर ध्यान केंद्रित किया। शिक्षा प्रणाली सामंजस्यपूर्ण के लिए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को प्राप्त कर सकती है। केवल ललित कलाएं ही संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ वास्तविकता और सत्य की धारणा को सशक्त बनाती हैं। ललित कला जीवन और शिक्षा का एक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए, क्योंकि यह किसी के अनुभव और ब्रह्मांड, व्यक्तिगत वास्तविकता और अमरता के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध की मान्यता को व्यक्त करना संभव है, इसके अलावा वे आनंद का स्रोत भी हैं।

उन्होंने पाठ्यक्रम में नैतिक सिद्धांतों को शामिल करने की सलाह दी। वह इतिहास, भूगोल, भाषा और विज्ञान जैसे सभी विषयों को स्थान प्रदान करना पसंद करते हैं। वह प्रोत्साहित करते हैं कि सौंदर्य संबंधी गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। टैगोर ने इस बात पर जोर दिया कि प्राथमिक कक्षाओं के लिए भाषाओं का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिए।

विचार विमर्श

अपने शैक्षिक विचारों को व्यावहारिक आकार देने के लिए, उन्होंने शांतिनिकेतन और विश्ववर्तती नामक दो शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की है। शांतिनिकेतन में सभी विशेषताएं हैं जैसे "शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली" अर्थात छात्र शिक्षक भीड़-भाड़ वाले शहर से दूर एक साथ रहते हैं और उन्हें मैदान, पेड़, नदी आदि के प्राकृतिक लाभ हैं।

विश्वभारती, शांतिनिकेतन का अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, भारतीय के साथ-साथ पश्चिमी सांस्कृतिक, विज्ञान, साहित्य कला को जोड़ता है। यह मानव भाईचारे और अंतरराष्ट्रीय समझ पर जोर देता है।

इसके माध्यम से टैगोर पूर्व और पश्चिम के बीच एक कड़ी स्थापित करना चाहते हैं इसलिए उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का समर्थन किया; लेकिन वह अंग्रेजी के महत्व के बारे में भी बात करते हैं।

टैगोर शिक्षा के माध्यम से भारत की गरीबी को मिटाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने विभिन्न शिल्प और कौशल प्रदान करने को महत्व दिया ताकि शिक्षार्थी आजीविका अर्जित कर सके।

आत्म-साक्षात्कार: यह आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया है और खुद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखने की क्षमता है जो दूसरों से अलग है। यह पूरी तरह से जागरूकता के साथ अपने अस्तित्व को समझने का एक तरीका है। दूसरे शब्दों में: यह महसूस करना कि कोई सोच रहा है और अपने विचारों के बारे में सोचना और स्थिति की मांग के अनुसार इसे चैनलाइज़ करना।

बौद्धिक विकास: यह विचारों, रचनात्मकता, जिज्ञासा, स्वतंत्रता, दिमागीपन के विकास को जोड़ता है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी अपनी सीखने की शैली विकसित कर सकता है और जीवन में पूर्णता की ओर ले जा सकता है। शारीरिक विकास: टैगोर ने शिक्षार्थियों के शारीरिक विकास को महत्व दिया और शारीरिक विकास के लिए शांतिनिकेतन में योग, खेल, खेल निर्धारित हैं। मानवता के लिए प्रेम: इसमें विश्व पर एकता की अनुभूति, ¬अंतर्राष्ट्रीय समझ और भाईचारे की भावना शामिल है। प्रकृति में प्राकृतिक विकास: टैगोर के अनुसार प्रकृति सबसे अच्छी शिक्षक है। यह शिक्षार्थियों को ऐसा वातावरण प्रदान करता है जिसमें वे अपनी गति के अनुसार ज्ञान अर्जित करते हैं। स्वतंत्रता: इसमें तीन श्रेणियां शामिल

हैं- हृदय की स्वतंत्रता, इच्छा की स्वतंत्रता और बुद्धि की स्वतंत्रता इसलिए शिक्षा इस तरह से प्रदान की जानी चाहिए कि वह इन स्वतंत्रताओं को प्राप्त करे। नैतिक और आध्यात्मिक विकास: शिक्षा में नैतिक और आध्यात्मिक विकास के विकास और वृद्धि के लिए पर्याप्त प्रावधान होना चाहिए। इसमें साझा करना, देखभाल करना और सहयोग करना आदि शामिल हैं।

सामाजिक विकास: इसमें सामाजिक चरित्र शामिल होते हैं जो शिक्षार्थियों को सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के योग्य जीवन जीने में सक्षम बनाता है।

पाठ्यचर्या: टैगोर ने शिक्षा की व्यावहारिकता पर जोर दिया जो शिक्षार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, प्रयोग करने, अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और उनकी विशिष्टता को समझने में सक्षम बनाता है। वे अनुशासन मुक्त वातावरण के प्रबल समर्थक थे।

शिक्षा के उद्देश्य को पाठ्यक्रम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, इसलिए टैगोर ने अपने पाठ्यक्रम को इस तरह से व्यवस्थित किया है कि यह शिक्षा के उस लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होगा जिसे उन्होंने परिभाषित किया है। इसमें विषय शामिल हैं: मातृभाषा, अन्य भारतीय भाषाएँ और कुछ विदेशी भाषाएँ, गणित, प्राकृतिक विज्ञान, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक-विज्ञान, कृषि, तकनीकी विषय, कुछ कौशल उन्मुख विषय, कला, संगीत, नृत्य, दर्शन, मनोविज्ञान, धर्म, भ्रमण, योग आदि

शिक्षण विधियाँ: इसमें वे विधियाँ शामिल हैं जो ठोस ज्ञान, आत्म-अवधारणा और वास्तविक जीवन की स्थिति से संबंधित होने में सहायक होती हैं जैसे गतिविधि विधि, यात्रा करते समय शिक्षण, या चलने, चर्चा, प्रश्न-उत्तर तकनीक, सहयोग तकनीक आदि।

शिक्षक: यद्यपि शिक्षा शिक्षार्थी केंद्रित थी फिर भी शिक्षा में शिक्षकों का अपना महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षक के पास शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बढ़ाने और उनकी (शिक्षार्थी) विशिष्टता को महसूस करने, इसे पूर्णता की ओर ले जाने और सद्भाव के साथ रहने की भावना पैदा करने की क्षमता है।

टैगोर आदर्श शिक्षकों के बारे में बात करते हैं- "गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" के रूप में छात्र संबंध यानी छात्र शिक्षक भीड़ भरे शहर से दूर रहते हैं और उन्हें मैदान, पेड़, नदी आदि के प्राकृतिक लाभ होते हैं।

निष्कर्ष

मन और आत्मा की स्वतंत्रता, आत्म-साक्षात्कार, और सद्भाव के साथ रहना टैगोर की शिक्षा के मुख्य स्तंभ हैं जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी अद्वितीय है और कुछ अद्वितीय गुण रखता है; इस अद्वितीय गुणों के माध्यम से व्यक्ति जीवन की बाधाओं को दूर कर सकता है और जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ

1. रवि सिंह और सोहन सिंह रावत। (2013) 'रबीनानाथ टैगोर का शिक्षा में योगदान', वीएसआरडी इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टेक्निकल एंड नॉन-टेक्निकल रिसर्च, 4 (3), 201-208।
2. अहमद शाह, एचएस (2015) 'टैगोर एंड हिज कंट्रीब्यूशन इन द फील्ड ऑफ एजुकेशन', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मल्टीडिसिप्लिनरी साइंटिफिक रिसर्च, 1 (3), 88-94।
3. मंडल, जीसी (2012) 'रबींद्रनाथ टैगोर की शिक्षा पर धारणाओं का चिंतनशील विश्लेषण' जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च, 5(8), 424-426।
4. तीरथ, आर. (2013) 'समकालीन भारतीय शिक्षा में रवींद्रनाथ टैगोर शिक्षा दर्शन की भूमिका और प्रभाव', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट, 7(1), 150-160।
5. हलकेरी, बी. (2014) 'शैक्षिक आदर्श और रवींद्रनाथ टैगोर के योगदान', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 2(6), 779-781।
6. चिंताकिंडी, बी। (2015)। 'टैगोर की वैश्विक शिक्षा का रहस्योद्घाटन: कल के लिए महत्व और निहितार्थ- एक अध्ययन', शिक्षा में उन्नत अनुसंधान और नवीन विचारों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(6), 461-464।
7. तिरुवरंगम, पी. (2015)। 'रवींद्रनाथ टैगोर की शिक्षा का दर्शन और भारतीय शिक्षा पर इसका प्रभाव', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च एंड एकेडमिक रिव्यू, 1(4), 42-45।